International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 02-02-2024, Accepted: 25-02-2024, Published: 19-03-2024
Volume 10, Issue 2, 2024, Page No. 25-31

बनारसी साड़ी वस्त्र उघोग में महिला श्रमिक और उनके स्वास्थ्य से सम्बन्धित मुद्दे: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

शेराज अहमद[1], नरेश कुमार सोनकर[2]
[1] शोधार्थी, समाजशास्त्र और सामाजिक मानवशास्त्र विभाग, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातिय विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश, भारत
[2] सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र और सामाजिक मानवशास्त्र विभाग, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातिय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
भारत में वर्तमान समय के संदर्भ में भारतीय अर्थव्यवस्था में सूती वस्त्र उद्योग का एक महत्वपूर्ण योगदान है। सूती वस्त्र उद्योग मुख्य दो भागों में विभाजित है। हथकरघा सूती वस्त्र उद्योग और विद्युतकरघा सूती वस्त्र उद्योग। विद्युतकरघा सूती वस्त्र उद्योग, हथकरघा सूती वस्त्र उद्योग का आधुनिकीकरण और विद्युतीकरण का परिणाम है। हथकरघा सूती वस्त्र उद्योग का विद्युतीकरण होने के बाद सूती वस्त्र उद्योग में लागत में कमी और उत्पादन में अत्यधिक तेजी से वृद्वि हुई और साथ ही मजदूरों के मजदूरी में भी कमी हो गयी जिसके कारण परिवार की आय में वृद्वि के लिए महिलाओं कों भी अपने परिवार की सहायता के लिए इस उद्योग में आना पड़ा ताकि उनका जीवन स्तर अन्य दूसरों की तरह बेहतर रहें लेकिन सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों के कारण महिलाओं की भागीदारी बाजार तक न हो करके केवल घरेलू श्रमिक के रूप में ही सीमित है। विद्युतकरघे का सूती वस्त्र उद्योग में प्रवेश के बाद महिला श्रमिकों की भागीदारी इस उद्योग में घट रही है। क्योंकि हथकरघें में महिलाएं मुख्यतः बुनाई का कार्य नहीं करती थी लेकिन बुनाई के पहले और बुनाई के बाद का कार्य महिलाओ द्वारा ही किया जाता था। क्योंकि हथकरघें में शारीरीक बल का अत्यधिक उपयोग करना पड़ता था। और महिलाओं कों शारीरिक रूप से कमजोर समझा जाता है। लेकिन विद्युतकरघें में शारीरीक बल की जगह कौशल कार्य करता है। वर्तमान में मशीनीकरण ने महिलाओ से संबंधित सभी कार्यों का मशीनीकरण कर दिया है। इस शोध प्रपत्र का मुख्य उद्देश्य वाराणसी जिले के अलईपुरा क्षेत्र के साड़ी वस्त्र उद्योग में कार्य करने वाली महिलाओं के कार्य के दौरान होने वाली विभिन्न कठिनाईयों और इससे होने वाले स्वास्थ्य सम्बन्धित कारकों का आकलन करना है। अलईपुरा क्षेत्र वाराणसी शहर का एक मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र है। यहाँ विद्युतकरघे से अत्यधिक मात्रा में बुनाई का कार्य होता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अलईपुरा क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलाओं की स्वस्थ्य से संबंधित समस्याओं का पता लगाना है। इस शोध प्रपत्र में प्राथमिक आंकड़ों को एकत्र करने के लिए साक्षात्कार अनुसूचि का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेशण से यह निष्कर्ष निकलता है कि वर्तमान समय में बुनाई मुख्य रूप से विद्युतकरघे से ही हो रही है। हथकरघा द्वारा वस्त्रों की बुनाई पहले की अपेक्षा बहुत कम हो गयी है। महिलाओं का विद्युतकरघे में आने का मुख्य कारण आर्थिक और वित्तीय आवश्यकता, बेरोजगारी, गरीबी और हथकरघे की अपेक्षा चलाने में आसानी लेकिन महिलाओं की साक्षारता और परिवार का छोटा आकार महिलाओं की इस उद्योग में भागीदारी का प्रमुख दोष है। आंकड़ों के विश्लेशण से यह पता चलता है कि अधिकांश महिलाएं इस उद्योग में होने वाले ध्वनि प्रदूषण से सिरदर्द और विद्युतकरघे के चलने के दौरान उससे निकलने वाले धांगो के छोटे–छोटे टुकड़े से सांस से सम्बन्धित समस्याओं से पीड़ित है। पिछले 4 से 5 वर्षों में विद्युतकरघा क्षेत्र बिजली आपूर्ति, बाजार गिरावट और बुनकरों के पलायन और अन्य राजनैतिक कारणों और 2016 में जब से विमौद्रिकरण और जी.एस.टी लागू हुआ है। तब से वाराणसी के बुनकरों की स्थिती और खराब होती गयी। साथ ही यह व्यवसाय अन्य राजनैतिक कारकों से भी पीड़ित है।

मूलशब्द: बुनकर महिलाएं, विद्युतकरघा, स्वास्थ्य समस्यायें, गरीबी, हथकरघा, सूती वस्त उद्योग

वाराणसी शहर विश्व के सबसे प्राचीनतम शहरों में से एक है। वाराणसी शहर का नाम गंगा की दो सहायक नदियों वरूणा और अस्सी के नाम पर पड़ा है। इससे पहले वाराणसी को बनारस और काशी के नाम से भी जाना जाता था। यह हिन्दू धर्म में सर्वाधिक पवित्र नगरों में से एक नगर के रूप में उल्लेखित है। क्योंकि यहाँ हिन्दू धर्म के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक ज्योतिर्लिंग श्री काशी विश्वनाथ स्थापित है। वाराणसी संगीत, कला, शिक्षा और शिल्प के कामों, जरी और बूटी के लिए पूरे विश्व में विख्यात है। वाराणसी जिले का मुख्य उत्पाद बनारसी शिल्प की साड़ीयाँ है। बनारसी शिल्प की साड़ीयों ने बनारस को एक अलग पहचान विश्वीक स्तर पर दिलायी है। परन्तु वर्तमान में इस कला का महत्व घटता जा रहा है। जिसका मुख्य कारण हथकरघे की जगह विद्युतकरघे का आ जाना है क्योंकि हाथ से बनी बनारसी साड़ी में असली सोने और चांदी के तारों का उपयोग किया जाता था। जिससे इसकी एक अच्छी मजदूरी बुनाई करने वाले मजदूर को मिलती थी। परन्तु विद्युतकरघे के आ जाने से इस व्यवसाय में चीन के द्वारा बनायी गयी नकली जरी का प्रयोग होने लगा जिससे लागत में कमी और मुनाफे में वृद्वि होने लगी लेकिन यह मुनाफा केवल पूंजीपति को ही मिलता है। मजदूर को उसकी मजदूरी उसके द्वारा किये गये कार्य पर ही निर्भर रहती है। बुनाई में प्रत्यक्ष रोजगार से अलग अप्रत्यक्ष रोजगार भी शामिल है जैसेः बुनाई से पहले इसके विभिन्न चरणों जैसे कपास का उत्पादन धागों को बनाने के लिए उसके बाद तैयार धागों को रंगने में साथ ही साथ उन्हे कोन में भरने व बुनाई करने से पहले उन्हे कांटी में भरने के विभिन्न कामों में लाखों लोग लगे हुए है। मध्यकाल में पश्चिम एशियाई देशो के कुशल मुस्लिम बुनकर मुगलो के साथ भारत आयें। भारत में मुख्य रूप से विद्युतकरघा उद्योग में महाराष्ट्र, गुजरात और उत्तर प्रदेश के वाराणसी के आस–पास के कुछ जिले भदोही, मउ,मिर्जापुर,टांड़ा, अकबरपुर, फैजाबाद, जौनपुर आजमगढ़ बुनाई के लिए उपयुक्त जलवायु वाले क्षेत्र है। मैनें अपने शोध प्रपत्र के लिए वाराणसी शहर के अलईपुरा क्षेत्र का चयन किया है। क्योंकि यहाँ पर

बुनकरों की आबादी अन्य क्षेत्रों से ज्यादा है। वर्तमान समय में बनारस में लगभग 2 लाख (सरदार मकबूल हसन द वायर) विद्युतकरघे चल रहे है। जब से इस व्यवसाय का विद्युतीकरण हुआ है। तब से हथकरघे से साड़ी बुनाई का काम कम हो गया है। जबकि इस व्यवसाय में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से लाखों लोग जुड़े हुए है। महिलाओं का योगदान भी इस उद्योग में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से बहुत महत्वपूर्ण है। यह शोध प्रपत्र महिआओं के स्वास्थ्य से सम्बन्धित है। जो कि इस उद्योग में महिलाओं के शामिल होने के बाद उनमें उपजी स्वास्थ्य से सम्बन्धित मुद्दों का पता लगाने के लिए किया जा रहा है।

साहित्य की समीक्षा

इस शोध पपत्र को लिखने से पहले इससे सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण साहित्यों की समीक्षा की गयी है।

वसंती रमन (2013) ने अपनी पुस्तक में यह बताया है कि बनारसी शिल्प वस्त्र के व्यवसाय में महिलाएं कितना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। हथकरघे से बुनाई का कार्य जब होता था। तो बुनने के कार्य के अलावा महिलायें ही अधिकांश कार्य करती थी। लेकिन वर्तमान में विद्युतकरघे के आ जाने से महिलाओं को भी बुनाई करने का अवसर प्राप्त हो रहा है। महिलायें आत्मर्निभर हो रही है। लेकिन विद्युतकरघे के आ जाने से हथकरघे के लुप्त होने से इस व्यवसाय के संकट और बुनकरों के पहचान के संकटों का उल्लेख भी उन्होने अच्छी तरह से किया है।

अब्दुल बिस्मिल्ला (1987) ने अपनी पुस्तक झीनी–झीनी बीनी चदरीयां में बनारस के बुनकरों का वर्णन किया है। वे कहते है कि बुनकारी व्यवसाय सभी व्यवसायों से बेहतर है। उन्होने बुनकरों की तुलना एक किसान से की है। और उन्होने बुनकरों के दिन–प्रतिदिन की क्रियाओं का उल्लेख किया है। उनका मनना है कि बुनकर जब किसी वस्त्र का उत्पादन करता है। तो मानो वह उस कार्य को इस प्रकार करता है कि वह ही उसका उपभोगकर्ता है। वह और उसका सम्पूर्ण परिवार उस काम में एकदम रम जाता है। जिस समय अब्दुल बिस्मिल्ला यह पुस्तक लिख रहे थे। वह समय इस उद्योग का स्वर्णीम युग था। बनारस के बुनकर लोग अपने साड़ी पर सोने के जरी के काम से सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके थे। और एकदम मौज के साथ अपने साड़ी बुनाई के कामों में लगे थे। और धीरे–धीरे आधुनिकता दरवाजे पर दस्तक दें रही थी।

एस, सुन्दरी (1989) ने अपनी पुस्तक में महिला श्रमिकों की समस्याओं का अध्ययन किया है। और देखा कि बुनाई क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बहुत अधिक है। लेकिन उनमें से अधिकांश महिला श्रमिकों की पारिवारिक स्थिती गरीबी रेखा सें भी नीचे है। लेखक ने गरीबी रेखा से भी नीचे जीवन यापन करने वाले गरीब बुनकरों कारीगरों के कम वेतन, असुरक्षा की नौकरी और कौशल की कमी के कारणों की पहचान की है।

तरूनकांती बोस (2007) ग्लोबलाइजेशन पुसेज वाराणसी विवर टू हंगर एण्ड देथ में बनारसी सूती वस्त उद्योग को वैश्ववीकरण के कारण हुये हॉनियों को दर्शाया है कि वैश्ववीकरण ने कैसे इस उद्योग को नुकसान पहुचाया क्योकिं पहले बुनाई हथकरघे से होती थी परन्तु वैश्ववीकरण के कारण वर्तमान में बुनाई विद्युतकरघे से हो रही है। गरीब बुनकर जो हथकरघे पर कार्य करता था। वह विद्युतकरघे को खरीद नहीं पा रहा है। जिससे बेरोजगारी में वृद्वी और भुखमरी का सामना बुनकरों को करना पड़ रहा है।

रानी सिंहा (2005) ने भारत में महिलाओं की आर्थिक विकास और उनके भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान को बताया है। उनका कहना है कि महिलाएं भारत की आधी आबादी है। अगर देश को आगे बढ़ाना है। तो सबसे पहले महिलाओं को समाज के मुख्य धारा में लाना होगा। तभी भारत देश विकासशील से विकसीत देशो की श्रेणी में आ पायेगा।

अध्ययन की अवश्यकता

महिलायें प्रत्येक स्वथ्य समाज के व्यवस्था की धुरी होती है और एक स्वथ्य समाज की निर्माणकर्ता भी इन्हीं से राष्ट्र का निर्माण होता है। अतः इनका स्वथ्य रहना अत्यन्त आवश्यक है। एक स्वथ्य महिला ही एक स्वथ्य राष्ट्र का निर्माण करती है।

वर्तमान में महिलाये अपने दिन–प्रतिदिन में दोहरे दायित्व से जुझ रही है। जिससे उनके स्वथ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। अतः इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बनारसी साड़ी व्यवसाय में संलग्न महिलाओं के स्वथ्य से संबंधित समस्याओं का पता लगाना तथा उनको अपने सेहत के प्रति जागरूक करना एवं परिवार के लोगों को उनके कार्य के प्रति प्रोत्साहन के लिये प्रेरित करना इत्यादि है।

इन्हीं बातों से प्रेरित होकर इस लेख के शीर्षक का चुनाव किया गया और साड़ी व्यवसाय में कार्यरत महिलाओ के स्वास्थ्य से संबंधित समस्याओं को जानने का प्रयास इस लेख के माध्यम से किया गया है। इसके निवारण के लिये महिलाओं से सुझाव भी मांगे गये है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध प्रपत्र का मुख्य उद्देश्य बनारसी साड़ी उद्योग में महिलाओं की भागीदारी और कार्य के दौरान होने वाली कठीनाईयों का पता लगाना है।

1. बनारसी साड़ी उद्योग में काम करने वाली महिलाओं की भागीदारी व इस व्यवसाय में उनकी वर्तमान स्थिती का पता लगाना।
2. बनारसी साड़ी उद्योग में काम करने वाली महिलाओं की स्वास्थ्य से सम्बन्धित समस्याओं का पता लगाना।

अध्ययन की प्रणाली

अध्ययन क्षेत्र

इस शोध प्रपत्र का अध्ययन क्षेत्र वाराणसी जिले का अलईपुरा क्षेत्र है। जो कि जैतपुरा थाना क्षेत्र के अंर्तगत आता है। जो कि वाराणसी का उत्तरी विधानसभा क्षेत्र के अंर्तगत सम्मिलित है। इस क्षेत्र मे बोली जाने वाली प्रमुख भारतीय भाषाओं में हिन्दी और उर्दू अत्यधिक बोली जाने वाली भाषा है। अलईपुरा क्षेत्र के कुछ उप–क्षेत्र दोषीपुरा, उस्मानपुरा, रसूलपुरा और कमालपुरा भी है। जिसमें बुनकरों की कुल आबादी लगभग 2 लाख (जनगणना 2011) के आस–पास है।

शोध उपकरण

शोध से संबंधित जानकारी एकत्रित करने के लिये साक्षात्कार अनुसूचि तथा उत्तरदाताओं का चयन करने के लिए उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन पद्धति का प्रयोग किया गया है। जिसमें 100 महिलाओं का चयन साक्षात्कार के लिये किया गया और शोध से संबंधित आँकड़े एकत्रित किया गये।

आंकड़ों का विश्लेषण

आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिये एकत्रित की गई सूचनाओ को मुख्यतः दो भागों में वर्गीकृत किया गया है।

1. स्वस्थ्य से संबंधित आँकड़े
2. सामाजिक–आर्थिक आँकड़े

सांख्यिकीय विश्लेषण

आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण करने के लिये एकत्रित किये गये आंकड़ों को वर्गीकरण और बारंबारता वितरण पद्धति द्वारा विश्लेषित किया गया है। शोध के परिणाम को दर्शाने के लिये प्रतिशत का प्रयोग किया गया है।

क्र.सं.	आयु	आवृत्ति	प्रतिशत (/)
1	20 से कम	17	17
2	30.40	41	41
3	40.50	30	30
4	50.60	08	08
5	60 से उपर	04	04
6	योग	100	100

स्रोतः सर्वेक्षण के आधार पर आँकड

परिणाम और परिचर्चा

आयु के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

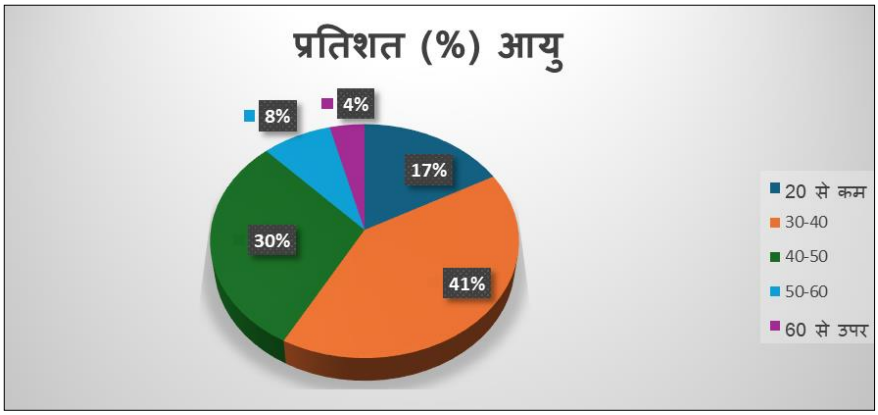

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि 17 प्रतिशत महिलाएं 20 वर्ष से कम उम्र की है। जो की साड़ी व्यवसाय से जुड़ी हुई है। 30 से 40 वर्ष की महिलाओं की संख्या सबसे ज्यादा 41 प्रतिशत है। जबकि 40 से 50 उम्र की महिलाओ की भागीदारी 30 प्रतिशत व 50 से 60 वर्ष और उससे अधिक उम्र की महिलाओं की संख्या सबसे कम 8 और 4 प्रतिशत है। जो की यह दर्शाता है कि प्रत्येक उम्र की महिलाओं की भागीदारी इस व्यवसाय में है। जो कि घरेलू श्रमिक के रूप में इस व्यवसाय में अपना योगदान दे रही है।

विवाह के आधार पर उत्तरदाताओ का वर्गीकरण

क्र. सं.	विवाह की स्थिती	आवृत्ति	प्रतिशत (/)
1	विवाहित	52	52
2	अविवाहित	35	35
3	विधवा	13	13
4	योग	100	100

स्रोतः सर्वेक्षण के आधार पर आँकड़े

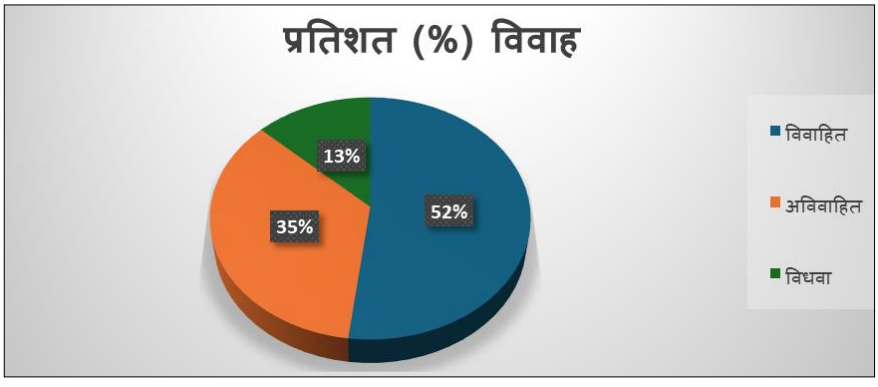

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि 52 प्रतिशत महिलाएं विवाहित है। जो अपने घरेलू कार्यो के अलावा भी इस व्यवसाय से जुड़ी हुयी है क्यूंकि उनके घर पर ही साड़ी से संबंधित कार्य होते है। इसलिए वो घरेलू कार्यों के अलावा साड़ी से संबंधित कार्यों को करती है। 35 प्रतिशत महिलाएं अविवाहित जो की स्कूल जाने वाली लड़किया है। उनका कहना है की पढ़ाई के अलावा खाली समय में वो घर के कारोबार में सहयोग करती है। जैसे कि साड़ी कट्टीइंग अंटा और नरी भरना इत्यादि तरह का कार्य वो स्कूल के अलावा करती है। 13 प्रतिशत विधवा महिलाए भी साड़ी से संबंधित कार्यों में लगी हुई है। जिनका किसी भी अन्य प्रकार का आय का साधन न होने के कारण इस व्यवसाय को आय के रूप चुनना पड़ा। जिससे वो अपने बाल–बच्चों का भरण–पोषण कर उन्हे एक अच्छी शिक्षा दे सकें।

शिक्षा के आधार पर उत्तरदाताओ का वर्गीकरण

क्र. सं.	शिक्षा	आवृत्ति	प्रतिशत (/)
1	अशिक्षित	36	36
2	कुरान	36	36
3	प्राथमिक	14	14
4	पूर्व माध्यमिक	06	06
5	माध्यमिक-उच्च माध्यमिक	04	04
6	उच्च शिक्षा	04	04
	योग	100	100

स्रोतः सर्वेक्षण के आधार पर आँकड़े

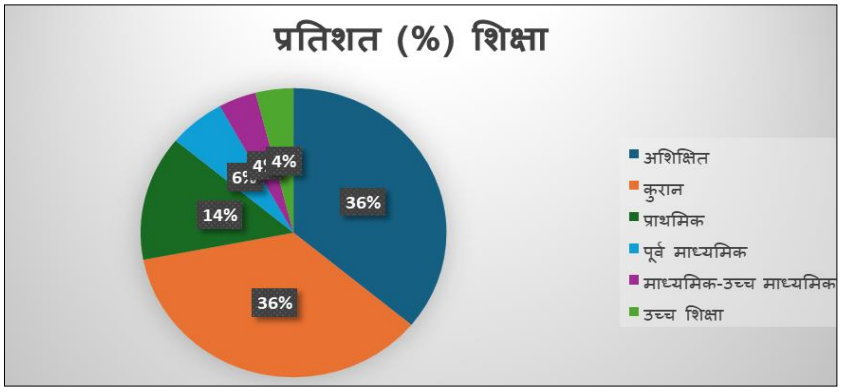

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण उत्तरदाताओं में 36 प्रतिशत महिलाएं अशिक्षित है। जो कभी भी किसी भी तरह का शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकी है। 36 प्रतिशत महिलाएं कुरान तक ही शिक्षा ली है। क्यूंकि उन्हें आधुनिक शिक्षा ग्रहण करने के लिए घर से बाहर घर वालों ने भेजा ही नहीं। प्राथमिक और पूर्व माध्यमिक विद्यालयों तक शिक्षा ग्रहण करने वाली महिलाओं की संख्या 20 प्रतिशत तक ही है। वो भी आस–पास प्राथमिक और पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के कारण ही शिक्षा ग्रहण कर पायी। हाईस्कूल और इंटर तक व उच्च शिक्षा ग्रहण करने वाली महिलाओं की संख्या केवल 8 है। जो की यह दर्शाता है की बुनकर महिलाओं में शिक्षा के प्रति रुचि कम है। जिसका कारण धर्म है। सच्चर कमेटी की रिपोर्ट में भी यह बताया गया है कि मुस्लिम महिलाओं की स्थिति अनुसूचित जनजाति की महिलाओं से भी बुरी है।

सामाजिक–आर्थिक स्थिति

आर्थिक कारकों के आधार पर उत्तरदाताओ का वर्गीकरण

क्र.सं.	कारक	आवृत्ति	प्रतिशत (/)
1	गरीबी	38	38
2	बेरोजगारी	22	22
3	अशिक्षा	27	27
4	परम्परा	13	13
	योग	100	100

स्रोतः सर्वेक्षण के आधार पर आँकड़े

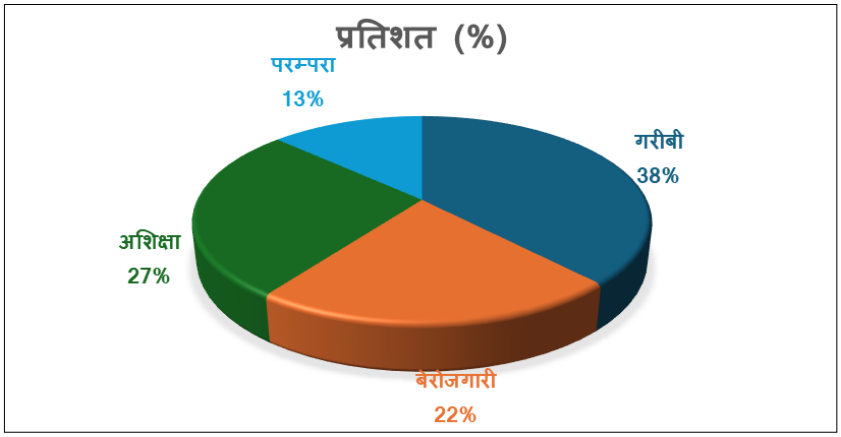

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण उत्तरदाताओं में 38 प्रतिशत महिलाओं ने गरीबी के कारण इस व्यवसाय को चुनने का कारण बताया है। ताकि उनकी रोजी–रोटी चलती रहे क्यूंकि अधिकांश महिलाओ को घर से बाहर निकल कर काम की इजाजत नहीं मिलती। जिसके कारण वह बिचौलियों का सहारा लेती है। बिचौलिये कुछ प्रतिशत पैसे रख कर उनको गद्दीदर से काम लेकर देते है। 22 प्रतिशत महिलाओं ने बेरोजगारी के कारण इस व्यवसाय को चुना क्यूंकि वर्तमान में कोरोना के दौरान अधिकांशतः लोगों की नौकरी चली गई और घर को चलाने के लिये महिलाओं को काम करना पड़ा। 27 प्रतिशत महिलाओं ने अशिक्षा और 13 प्रतिशत महिलाओं ने कई पीढ़ियों से चली आ रही बुनाई की परम्परा का कारण इस व्यवसाय में जुड़ने का

कारण बताया है। शिक्षित नहीं होने के कारण कुछ महिलाओ को इस व्यवसाय को चुनना पड़ा जबकि कुछ का मानना था कि उनके घर में बुनाई से संबंधित कार्य पीढ़ियों से चल आ रहा है। वो अपने बचपन से इसे देखती और करती आ रही है। देखते–देखते ही वो इन कार्यों को करना सिखा और आज एक कुशल कारीगर है। उनका कहना है कि हमारी आने वाली पीढ़ी भी ये कार्य करती रहेगी।

प्रतिदिन के आय के आधार पर उत्तरदाताओ का वर्गीकरण

क्र. सं.	आय रूपये में	आवृत्ति	प्रतिशत (/)
1	50-100	25	25
2	100-150	56	56
3	150-200	19	19
	योग	100	100

स्रोतः सर्वेक्षण के आधार पर आँकड़े

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि महिलाओं की प्रतिदिन की आय क्या है। 25 प्रतिशत महिलाओं की प्रतिदिन की आय 50 से 100 रूपये के मध्य है। वही 100 से 150 रूपये प्रतिदिन की आय वाली महिलाओं की संख्या सबसे ज्यादा 56 प्रतिशत है। 150 से 200 रूपये प्रतिदिन की आय वाली महिलाओं की संख्या 19 प्रतिशत है। जो कि यह दर्शाता है कि महिलाओं कि आय काम करने के घंटों के हिसाब से काफी कम है। जिसका कारण गद्दीदर है क्यूंकि गद्दीदर कम पैसे में महिलाओ से काम करा लेता है। जिसका कारण यह है की महिलाओ की पहुच बाजार तक नहीं है। जिससे यह पता लग सके की उनके द्वारा जो कार्य किये जाते है। उस कार्य की सही कीमत क्या है। जैसा की कार्ल मार्क्स का कहना है कि पूंजीपति मजदूरों का दिन–रात शोषण करते है। उनसे अतिरिक्त कार्य करवाता है। उसके कार्य से कमाये गये अतिरिक्त मूल्य (सर्प्लस वैल्यू) को मजदूरों को न देकर दिन–प्रतिदिन और अमीर होता जा रहा।

प्रतिदिन कार्य के घंटों के आधार पर उत्तरदाताओ का वर्गीकरण

क्र. सं.	घंटों	आवृत्ति	प्रतिशत (/)
1	1-6	14	14
2	6-8	40	40
3	8-10 से अधिक	46	46
	योग	100	100

स्रोतः सर्वेक्षण के आधार पर आँकड़े

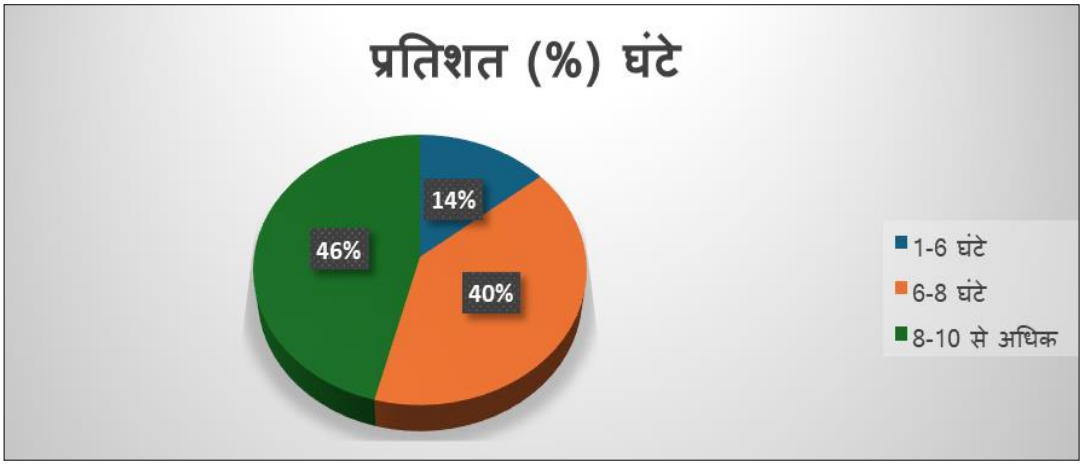

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि 46 प्रतिशत महिलाएं अपने घर के कार्यो के अलावा प्रतिदिन 8 से 10 और उससे भी अधिक घंटों तक बुनाई के कामों में लगी रहती है। 40 प्रतिशत महिलाएं प्रतिदिन लगभग 6 से 8 घंटों तक व 14 प्रतिशत महिलाएं प्रतिदिन कम से कम 6 घंटों तक बुनाई के कामों में लगी रहती है। जिससे उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। वो अपने सेहत का ख्याल नहीं रख पाती क्यूंकि वो दोहरे चरित्र का शिकार हो जाती है। जिसके कारण उनको आराम करने का समय नहीं मिल पता और वो दिन के अलावा देर रात तक काम करती रहती है। देर रात काम करते वक्त उनको पर्याप्त रोशनी नहीं मिल पाती और उनको आँख से संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

महिला श्रमिकों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव

यह शोध प्रपत्र वाराणसी जिले के अलईपुरा क्षेत्र में विद्युतकरघे के क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलाओं के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव पर आधरित है। महिलाओं के निरंतर कार्य करने के कारण उत्पन्न होने वाले तनावों और महिलाओं के सामान्य रोग और अन्य रोग को जांच करने की आवश्यकता है। वाराणसी जिले में बुनकरों में पायी जाने वाली बीमारीयों में अस्थमा, टीबी, साँस सम्बन्धित समस्यायें, मानसिक तनाव, सिरदर्द, त्वचा सम्बन्धित समस्यायें आँख से सम्बन्धित तथा माँसपेशियों व पीठ दर्द सम्बन्धित समस्यायें है।

कार्य की प्रकृति के कारण होने वाली महिला श्रमिकों में बीमारिया

क्र. सं.	बीमारी	आवृत्ति	प्रतिशत
1	साँस से सम्बन्धित समस्यायें/ टी बी	27	27
2	माँसपेशियों व पीठ दर्द/जोड़ो का दर्द	31	31
3	सिरदर्द	14	14
4	त्वचा सम्बन्धित समस्यायें	08	08
5	आँख सम्बन्धित समस्यायें	15	15
6	बहरापन	05	05
	योग	100	100

स्रोतः सर्वेक्षण के आधार पर आँकड़े

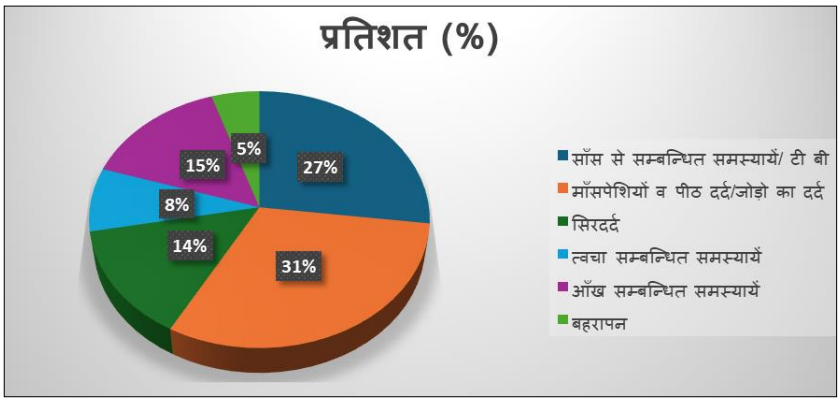

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि कौन–कौन सी बीमारियाँ किन–2 कारणों से सम्बन्धित है सबसे ज्यादा 31 प्रतिशत महिलाएं माँसपेशियों व पीठ दर्द/जोड़ो का दर्द से पीड़ित है। 27 प्रतिशत महिलायें साँस से सम्बन्धित समस्यायें टी0 बी0 से पीड़ित है। जो कि एक बड़ा कारण कोरोना काल में मरने वालों की संख्या में हुआ। धागे को रंगने के कारण त्वचा सम्बन्धित रोगों से 8 प्रतिशत महिलायें पीड़ित है। 14 प्रतिशत महिलायें सिरदर्द और मानसिक रोगों से पीड़ित है। 15 प्रतिशत महिलायें लगातार काम के दौरान आँख में पड़ने वाली रोशनी के कारण आँख से सम्बन्धित समस्याओं से पीड़ित है तथा 5 प्रतिशत महिलायें कान के द्वारा कम सुनाई देने का भी शिकार है। जिससे उन्हे सुनने से सम्बन्धित समस्याओं का सामना करना पड़ता है क्यूंकि एक विद्युतकरघे की ध्वनि 94–99 dBA तक होती है और एक सामान्य मनुष्य की सुनने की क्षमता 10–15 dBA तक होती है

अध्ययन का निष्कर्ष

अध्ययन के समग्र के विश्लेषण से यह पता चलता है कि पिछले कई वर्षों में विद्युतकरघे ने हथकरघे की जगह ले ली है। जिससे साड़ी के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी घट रही है। क्यूंकि विद्युतीकरण ने सभी कार्यों का मशीनीकरण कर दिया है। महिलाओं के हाथ से करने वाले कार्यों को लगभग समाप्त ही कर दिया है। हालांकि धीरे–धीरे कुछ महिलायें विद्युतकरघे के कार्यों को सीख रही है। लेकिन वे अभी वर्तमान में कम वेतन और ज्यादा काम के बोझ के मामले में भेदभाव का शिकार है। अशिक्षा के कारण इन्हे इस बात का ज्ञान भी नही हो पाता की पूँजीपति उनका शोषण कर रहा है क्योंकि पूँजीपति कम से कम मजदूरी देकर अधिक से अधिक मुनाफा कमाना चाहता है। वह अपने से नीचे शोषितों का शोषण दिन–प्रतिदिन करता रहता है। वैसे भी वर्तमान समय में भी जब सरकार द्वारा महिलाओं को समान कार्य के लिए समान वेतन देने का अधिकार दे दिया गया है। तब पर भी आज उन्हे पुरूषों के समान वेतन नहीं दिया जा रहा है। जबकि वे पुरुषों के समान ही कार्य करती है। कार्य के अतिरिक्त बोझ के कारण उनका स्वास्थ्य बराबर खराब ही रहता है। खराब स्वास्थ्य में भी वे निरन्तर कार्य करती रहती है। क्योंकि वह जानती है कि अगर वह समय पर कार्यो को पुरा नहीं करेंगी तो आगे उन्हे पूंजीपति द्वारा काम मिलना बंद हो जायेगा और वह बेरोजगार हो जायेंगी। आस–पास के सरकारी व अर्ध–सरकारी अस्पतालों (मण्डलीय अस्पताल कबीरचौरा व जामिया तथा मौलाना आजाद बुनकर अस्पतालों) में अवलोकन से पता चलता है कि यहाँ पर साँस से सम्बन्धित समस्याओं व टी0 बी0 के मरीज अत्यधिक मात्रा में बुनकर समुदाय से प्रतिदिन आते है। एक मरीज से बात करने से यह पता चलता है कि जब वे बुनकारी का काम करते है। तो विद्युतकरघे से रेश्म के धागों से छोटे–छोटे कण निकलते है। वही कण नाक व मुख से होकर फेफड़े तक पहुच जाता है। जिससे साँस से सम्बन्धित समस्यायें उत्पन्न होने लगती है। जो कि बाद में टी0 बी0 का एक रूप ले लेती है। ज्यादातर मरीज सिरर्दद और मानसिक रोगो से भी जुझ रहे है। क्योंकि जब विद्युतकरघा चलता है। तो उसकी गति के कारण आवाज उत्पन्न होती है। जिसके कारण ध्वनि प्रदूषण होने से सिरर्दद और मानसिक तनाव सम्बन्धित विकार व्यक्ति के अन्दर उत्पन्न होने लगता है। साथ ही साथ लगातार कई घंटों तक खड़े होने की वजह से माँसपेशियों में दर्द व पीठ दर्द तथा जोड़ो का दर्द से सम्बन्धित समस्याओं का सामना भी कई बुनकर महिलाओं को करना पड़ रहा है।

अतः भारतीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं के योगदान को बढ़ाने के लिए उनकी स्वास्थ्य के लिए उचित व्यवस्था सरकार को करनी चाहिए क्योकि भारतीय अर्थव्यवस्था में पुरुषों का जितना योगदान है। उतना योगदान महिलाओं का भी है। इसलिए महिलाओं की भागीदारी भी हमें ही तय करना है। नीति निर्माताओं को महिलाओं की स्थिती में सुधार के लिए एक बेहतर नीति का निर्माण करना चाहिए। जिससे वह एक स्वस्थ्य समाज का निर्माण कर सकें और आने वाले समय में अपने को बुनाई तक ही सिमित न रखें बल्कि वे अपने को बाजार तक ले जाये और पुरुषों के बराबर अपना योगदान इस व्यवसाय को दे ताकि देश की अर्थव्यवस्था और अन्य देशों से बेहतर बन सके क्योंकि आने वाले समय में हम विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के मार्ग पर अग्रसर है। हमारे यश्शवी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपने उद्बोधनों में महिलाओ को राष्ट्र के आर्थिक गतिविधियों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेने की बात की और बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ का नारा दिया।

संदर्भ सुंची

1. Raman, Vasanthi. The warp and the weft: Community and Gender Identity Among Banaras weavers. Routledge, 2010.
2. Bismillah, Abdul. Jheeni Jheeni Beeni Chandaria, New Delhi Rajkamal Prakashan, 1987.
3. Shoaib M. A Study of socio- economic problems of weavers. Varanasi, Ganga Kaveri Publishing House, 1994.
4. Shoaib M. The Julahas: An Ethnographic and socioeconomic of madanpuria weavers of Banaras, 2004-05.
5. Bose Tarun Kanti. Globalization pushes Varanasi weavers to Hunger and Death, 2007.
6. Raman, Vasanthi. Entangled yarns: Banaras weavers and social crisis. Indian Institute of Advanced Study. Rashtrapati Nivas Shimla, Kirti Nagar, New Delhi, 2013.
7. Sinha R. Status of women and Economic Development-Some Econometric, Evidence, RBSA Publishers, 2005.
8. Meher, Raj Kishor. The Handloom industry and the socio-economic conditions of weavers in Orissa, Internal Research Project, NCDS, Bhubaneshwar, 1995.